वन हेल्थ एण्ड नो रेबीज– 2030

''एक स्वास्थ्य एक महत्वपूर्ण उद्देश्य है जिसका उद्देश्य सभी जीवों के स्वास्थ्य को सुरक्षित बनाना है। इस प्रकल्प का हिस्सा एक रेबीज मुक्त दुनिया की ओर कदम बढ़ाना और 2030 तक मानव, पशु रोग को पूरी तरह से खत्म करने का लक्ष्य है।

वन हेल्थ क्या है?

वन हेल्थ लोगो, जानवरों और पर्यावरण के स्वास्थ्य को संतुलित और अनुकूलित करने के लिये एक एकीकृत दृष्टिकोण है।

वही दूसरी ओर,

रेबीज (जलांतक) एक जूनोटिक विषाणु (लिसा वायरस) जनित बीमारी इंसानों एवं अन्य गर्भ रक्तयुक्त जानवरो मे हो जाती है। इसके एक नहीं कई लक्षण है जैसे –

1. पानी से डरना
2. हिंसक गतिविधि
3. व्यवहार में बदलाव आना इत्यादि।

''भारत ने विश्व रेबीज दिवस पर 2030 तक कुत्तों की मध्यस्थता वाले रेबीज उन्मूलन के लिये अपनी नई राष्ट्रीय नियंत्रण योजना शुरू करके परिदृश्य किया है।

भारत रेबीज के लिए स्थानिक है परंतु देश के कुछ स्थान जैसे– अंडमान निकोबार, लक्ष्यद्वीप जैसे स्थानों में यह बीमारी नहीं है। दुनिया में लगभग 36% मानव– रेबीज से होने वाले मौंतो से पीड़ित है जो कि संक्रमित जानवरों से फैलती है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के मुताबिक रेबीज के कारण 59,000 लोग पतिवष अपनी जान गवाते ह।

1. 99% मानव रेबीज की मौते सिर्फ संक्रमित कुत्तों के काटने से हुई है।
2. 95% से अधिक मौते सिर्फ एशिया और अफ्रीका में हुई है।

3. 80% से अधिक मौते जो रेबीज से हुई है वह शिक्षा न मिलने और उपचार न मिलने के कारण हुई है।

4. दुनिया में हर 10 में 4 बच्चों की मौते प्रतिवर्ष इस जनित बीमारी के कारण होती है।

5. प्रति 2 सेकेण्ड में श्वान के काटने से हर 30 मिनट में भारत में एक मृत्यु होती है।

6. लक्षण प्रकट होने के बाद रेबीज का परिणाम निश्चित मौत ही है। परत, टीकाकरण सही समय पर हो जाये तो 100% जीवन सुरक्षित हो सकता है।

पशुओं में रेबीज को पैदा करने वाले विषाणु हलकाये कुत्ते, बिल्ली, बंदर, गीदड़, लोमड़ी, चमगादड, नेवले के काटने से स्वस्थ पशु और इंसानों के शरीर में लार के साथ वायरस घाव की गहराई में पहुँच जाता है।

यहां से वह मस्तिष्क तक पहुँचता और नुकसान पहुँचाता है। इसकी समयावधि दो सप्ताह से लेकर 20 वर्ष तक हो सकती है। काटने के स्थान वह मस्तिष्क के बीच की दूरी जितनी कम होगी विषाणु उतना ही जल्दी मस्तिष्क तक पहुँचता है। इसी आतंक को कम करने और जड़ से मिटाने के लिए एक स्वास्थ्य और रेबीज को 2030 तक खत्म करने के लिये यह आयोजन किया जा रहा है।

यह दृष्टिकोण समाज के विभिन्न स्तरों पर कई क्षेत्रों विषयों और समुदाओं को एक साथ कार्य करने के लिये प्रेरित करता है। विभिन्न विभाग जैसे स्वास्थ्य विभाग, शिक्षा विभाग, पशुपालन विभाग एवं डेयरी विभाग, वन विभाग पंचायती राज्य स्तर जब एक साथ कार्य करगे तभी 2030 तक देश को रेबीज मुक्त बनाया जा सकता है।

लक्षण के बात करे तो जानवरों में –

1. अजीब व्यवहार जैसे कभी उदास होना, कभी बेचैन होना या फिर कभी चिड़चिड़ाना।

2. मुँह से झाग आना।

3. कभी–कभी पशु पागल हो जाता है और वह राह में पड़ने वाले किसी भी व्यक्ति या चीज को काट सकता है।

4. कुत्ता फटी से आवाज में भौकता है अर्थात् उसके पहले वाली आवाज बदल जाती है।

5. मुख्य लक्षण है कि वह पानी से डरता है।

6. श्वान में लक्षण में अवस्था में होते है – 1. शांत अवस्था 2. उग्र अवस्था

मनुष्यो में लक्षण–

1. काटी गई जगह पर पीड़ा और झनझनाहट होना।

2. पानी से डरना।

3. श्वान जैसे भौंकना।

4. मुँह से लार आना।

5. दौरे पड़ना इत्यादि।

जाँच –

- जानवरों में लक्षण की सहायता से काफी मदद मिल जाती है।
- श्वान के मस्तिष्क की नेग्रो बॉडी के लिये जांच की जाती है अथवा इम्यूनोफ्लोरेसेंस टेस्ट किया जाता है।
- इंसानों में रेबीज इंटीजन का पता इम्यूनोफ्लोरेसेंस नामक एक विधि से किया जाता है।

उपचार –

- रेबीज का कोई उपचार नही है एक बार रोग के लक्षण प्रकट हो जाने पर रोगी पशु या मनुष्य की मौत निश्चित होती है। इसलिए इसका रोकथाम ही एकमात्र उपाय है।

1. अगर इंसानों को किसी श्वान जो कि रेबीज का शिकार है अगर काट जाये या कोई भी श्वान काटे तो तुरंत उस घाव को कपड़े धोने वाले साबुन और पानी से काफी देर (लगभग 15 मिनट) तक धोना चाहिए। जिस साबुन में कास्टिक सोडा, एवं 1% सोडियम हाइपो क्लोराईड होता है वह उतना प्रभावशाली होता है। इसके बाद तुरंत चिकित्सक के पास जाना चाहिए।

2. यदि किसी भी जानवर को रेबीज से पीड़ित श्वान, बिल्ली या अन्य कोई जानवर का काट ले तो तुरंत उसको पशु चिकित्सक के पास ले जाना चाहिए।

रोकथाम –

- भारतीय समाज में लवारिश श्वान की बढ़ती संख्या एक सबसे बड़ी समस्या है इसके रोकथाम के लिये श्वानों का नसबंदी ऑपरेशन बड़े पैमाने पर चलाया जाना चाहिए।

- पशु जन्म नियंत्रण की अधिक स्थापना होने से आवारा एवं सड़क पर घूमते श्वानों की संख्या में नियंत्रण होने से भी रेबीज के विस्तार को प्रभावी रूप से रोका जा सकता है।

- देश प्रदेश या किसी क्षेत्र में बाहर से नये श्वान के प्रवेश के समय रेबीज हेतु जांच होनी चाहिए।

- एक बार किसी रेबीज ग्रस्त कुत्ते द्वारा अन्य कुत्तों को काट लेने पर एंटी रेबीज टीकों का पूरा कोर्स लगवाना चाहिए।

- जन्म के तीन माह बाद श्वान को एंटी रेबीज का टीका लगवाना चाहिए फिर 28 या 30 दिन बाद उसका बूस्टर डोस लगवाना चाहिए एवं प्रतिवर्ष पुनः टीकाकरण उसी दिनांक पर लगवाना चाहिए।

एक स्वास्थ्य और रेबीज को 2030 तक खत्म करने का माध्यम अद्वितीय है, और हम सभी को इसमें भागीदार बनने की जरूरत है। विश्व में कुछ देश 2007 में खुद को श्वान

जनित रेबीज संक्रमण से मुक्त कर चुके है तथा विश्व स्वास्थ्य संगठन, विश्व पशु स्वास्थ्य संगठन, संयुक्त राष्ट्र खाद्य एवं कृषि संगठन, ग्लोबल एलायंस फॉर रेबीज कंट्रोल का कार्य एक स्वास्थ्य पर केन्द्रित है एवं इनका लक्ष्य 2030 तक श्वान जनित रेबीज से होने वाल राग को खत्म करना है। भारत में गोवा में 2018 के बाद से अभी तक कोई रेबीज रोगी की शिकायत दर्ज नही की गई है।

- भारत में पशु जन नियंत्रण 2023 के तहत कम से कम 70% श्वानों का नसबंदीकरण करना हमारा लक्ष्य है।

- राज्य स्तरीय पर नगर निगम, एम्स भोपाल, जी.एम.सी. भोपाल, एनीमल हसबेनड्री विटेनरी कॉलेज, वन विभाग के द्वारा साथ मिलकर यह लक्ष्य पूर्ण करने की योजना तैयार की गई है।

- इन संस्थाओं के साथ–साथ नानाजो दशमख पश चिकित्सा विज्ञान विश्वविद्यालय, जबलपर ने अपने प्रयासों में विश्व रेबीज ड (28 सितम्बर) पर जो कि लुईस लुई पास्चर की पूर्ण तिथि के स्वरूप में मनाया जाता है, विश्व जुनोसिस डे (06 जुलाई) एवं विश्व वेटेनरी डे (अप्रैल के अंतिम शनिवार के दिन) आयोजित किया। जिससे लोगो को इस रेाग के प्रति जागरूक किया जा सके। इसके तहत विश्वविद्यालय में विभिन्न प्रकार के कार्यक्रम जैसे– चित्र कला, निबंध लेखन, प्रतियोगी प्रश्नोत्तरी एवं जागरूकता अभियान चलाया गया है।

  यह एक महत्वपूर्ण कदम ह जिससे हम सभी को एक स्वस्थ और सुरक्षित दुनिया में जीवन यापन करने का मौका मिल सकता है।